بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail: ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-12.04.2024 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

ओहद की लड़ाई में सहाबा रज़ीयल्लाहु अन्हुम एवं सहाबियात रिज़वानुल्लाहि अलैहिम अजमअीन के बलिदानों तथा ओहद के शहीदों के बुलन्द स्तर का ईमान वर्धक वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 12, अप्रैल 2024. स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- रमज़ान से पहले ख़ुत्बात में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युद्धों का वर्णन हो रहा था। जिसमें आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जीवन परिचय भी बयान किया था, आज मैं उस हवाले से कुछ बयान करूँगा।

रिवायत में आता है कि हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ी. की माता जी आँहूज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आईं तो सअद ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में निवेदन पूर्वक कहा कि ये मेरी माता जी हैं। आप स. उस समय घोड़े पर सवार थे, आपने अपना घोड़ा रोक लिया तथा फ़रमाया कि इनका स्वागत करो। वे निकट आईं तथा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखने लगीं। आप स. ने उनके बेटे हज़रत उमरू बिन मुआज़ की शहादत पर खेद प्रकट किया तो उन्होंने कहा कि जब मैंने आपको कुशल एवं सलामत देख लिया तो मेरा दुःख एवं कष्ट सब समाप्त हो गया। आप स. ने फ़रमाया- तुम्हार लिए शुभ सूचना है तथा अन्य शेष सब शहीदों को भी यह शुभ सूचना दे दो कि ये सब मृतक जन्नत में एक दूसरे के साथी हैं तथा सब ने अपने अपने घर वालों के लिए भी हक़ तआला से सिफ़ारिश की है।

उम्मे सअद रज़ी. ने निवेदन किया कि हम सब राज़ी हैं तथा इस शुभ सूचना के बाद भला कौन इन पर रो सकता है। फिर उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निवेदन किया कि सब शहीदों के परिजनों के लिए दुआ करें। अतः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह! इनके दिलों से शोक एवं पीड़ा को मिटा दे, इनकी कठिनाईयों को दूर फ़रमा दे तथा शहीदों के उत्तराधिकारियों को इनका बहतर उत्तराधिकारी बना दे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु अन्हु मदीने वालों की इस भावना का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि अब देखो! वह महिला जिसका बुढ़ापे में असाए पीरी (वृद्धावस्था की सोटी) टूट गया था, किस दलेरी से कहती है कि मेरे बेटे की मौत के दुःख ने मुझे क्या खाना है, जबकि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जीवित हैं तो मैं इन कष्टों को भून कर खा जाऊँगी।

एक अन्य अवसर पर इसी घटना का वर्णन करके हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि ऐ अन्सार! मेरी जान तुम पर फ़िदा हो, तुम कितना अधिक सवाब ले गए। इसी तरह सहाबियात रज़ी. की क़ुर्बानियों के परिपेक्ष में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. एक अवसर पर अहमदी महिलाओं को सम्बोधित करते हुए फ़रमाते हैं कि यही वे महिलाएँ थीं जो इस्लाम के प्रचार एवं प्रसार में परुषों के कन्धे से कन्धा मिला कर चलती थीं तथा यही वे महिलाएँ थीं जिनपर इस्लामी दुनिया गर्व करती है। तुम्हारा भी दावा है कि तुम हज़रत मसीह मौऊद अलै. पर ईमान लाई हो और हज़रत मसीह मौऊद अलै. हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की छाया हैं, मानो दूसरे शब्दों में तुम सहाबियात की छाया हो। किन्तु सच सच बताओ कि क्या तुम्हारे भीतर दीन की सेवा करने की वही भावना ह जो सहाबियात में थी?

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि यद्यपि कुछ घटनाओं का वर्णन पहले हो चुका है, जैसे यह घटना, इसका भी पहले वर्णन हो चुका है, परन्तु ये ऐसी घटनाएँ हैं कि जो बार बार तथा विभिन्न आयामों में सुन कर एक अदभुत ईमान की अवस्था एवं जोश उत्पन्न होता है। प्रारम्भिक युग की इन बलिदानी महिलाओं का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि ईसाई दुनिया मरयम मग्दलीनी तथा उसकी साथी महिलाओं की इस दलेरी पर ख़ुश है कि वे सुबह के समय दुशमन से छिप कर मसीह की क़ब्र पर पहुंची थीं, परन्तु मैं इनसे कहता हूँ कि आओ! और ज़रा मेरे महबूब स. के श्रद्धालुओं एवं बलिदानियों को देखो कि किन स्थितियों में उन्होंने उसका साथ दिया तथा किन परिस्थितियों में उन्होंने तौहीद के झंडे को बुलन्द किया।

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ओहद की लड़ाई के बाद मदीने पहुंचे तो मुनाफ़िक़ तथा यहूदी ख़ुशियाँ मनाने तथा मुसलमानों को बुरा भला कहने लगे और यह कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) शासक बनना चाहते हैं (नऊज़ुबिल्लाह) और किसी नबी ने आजतक इतनी हानि नहीं उठाई जितनी उन्होंने उठाई है। स्वयं भी ज़ख़मी हुए तथा उनके सहाबी रज़ी. भी ज़ख़मी हुए और

कहते थे कि यदि तुम्हारे वे लोग जिनकी हत्या हुई हमारे साथ रहते तो कभी हत्या न होती। हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु ने ऐसी बातें करने वाले पाखंडियों का वध करने की अनुमति चाही तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क्या वे इस शहादत की अभिव्यक्ति नहीं करते कि अल्लाह क सिवा कोई पूज्य नहीं और मैं अल्लाह का रसूल हूँ? क्या ये लोग कलिमा नहीं पढ़ते? हज़रत उमर रज़ी. ने कहा कि क्यूँ नहीं! कलिमा तो पढ़ते हैं किन्तु तलवार के भय से, अन्यथा पाखंडियों जैसी बातें क्यूँ करते। अब इनका भेद प्रकट हो गया है तथा इनके दिलों की बात सामने आ गई है तथा अल्लाह ने इनके द्वेषों को प्रकट कर दिया है, अब इनसे बदला लेना चाहिए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसने ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह कहा, मुझे उसकी हत्या से मना किया गया है।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि यह बात इन तथाकथित आलिमों का मुंह बन्द करने के लिए काफ़ी है जो अहमदियों के बारे में बावजूद इसके कि अहमदियों में पाखंड का संकेत तक नहीं, फिर भी इन्हें काफ़िर कहते हैं और कहते हैं कि इनकी हत्या करना उचित है। इन तथाकथित आलिमों ने इस्लाम को बदनाम किया हुआ है।

ओहद के शहीदों के जनाज़े के बारे में बुख़ारी की रिवायत है जिससे इन शहीदों के स्तर एवं प्रतिष्ठा का पता चलता है। उक़बा बिन आमिर रज़ी. की रिवायत है कि आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आठ साल बाद ओहद के शहीदों की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी, फिर मिम्बर पर चढ़े और फ़रमाया कि मैं तुम्हारे आगे नेतृत्व करने वाला रहूँगा तथा मैं तुम पर गवाह हूँगा। तुमसे मिलने का स्थान हौज़ है तथा उसे मैं अपने इस खड़े होने की जगह से देख रहा हूँ तथा तुम्हारे बारे में मुझे यह भय नहीं कि तुम शिर्क करोगे, किन्तु मुझे तुम्हार सम्बंध में संसार क लाभ का भय है कि तुम इसके लिए एक दूसरे का मुक़ाबला करने लगोगे।

हज़रत जाबिर रज़ी. कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाया करते थे कि जब मुझे ओहद के शहीद याद आते हैं तो ख़ुदा की क़सम! मेरी यह इच्छा होती है कि काश, मैं भी अपने साथियों के संग पहाड़ों की घाटियों में ही रह गया होता, अर्थात उनके साथ ही शहीद हो गया होता।

आंहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ओहद के शहीदों की क़बरों के दर्शन किए तथा यह दुआ की, ऐ अल्लाह! निश्चित ही मैं तेरा बन्दा हूँ और नबी हूँ तथा यह गवाही देता हूँ कि ये लोग शहीद हैं। जो इनके दर्शन करे तथा क़यामत के दिन तक सलाम भेजे तो ये उसका जवाब देंगे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ओहद के शहीदों के लिए फ़रमाया कि ये वे लोग हैं जिनका मैं गवाह हूँ। रिवायत में लिखा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर साल के आरम्भ में ओहद के शहीदों की क़ब्रों के दर्शन हेतु पधारते थे। रावी कहते हैं कि बाद में हज़रत अबू बकर रज़ी और फिर

हज़रत उमर रज़ी. तथा फिर हज़रत उसमान रज़ी. भी इसी तरह इन शहीदों की क़ब्रों पर तशरीफ़ ले जाया करते थे।

हज़रत बिशर रज़ी. के पिता जी ओहद में शहीद हो गए थे, वे अपने पिता जी के लिए रोते थे। तब ही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वहाँ से गुज़रे और फ़रमाया कि चुप रहो, क्या तुम इस बात पर ख़ुश नहीं हो कि मैं तुम्हारा बाप बन जाता हूँ और आयशा तुम्हारी माँ। बिशर ने निवेदन पूर्वक कहा कि क्यूँ नहीं या रसूलुल्लाह ! इससे बढ़ कर और ख़ुशी की बात क्या होगी। फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके सिर पर हाथ फेरा। जब हज़रत बिशर रज़ी. बूढ़े हो गए तो पूरा सिर सफ़ेद हो गया, किन्तु वह भाग जहाँ नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपना पवित्र हाथ रखा था, बालों का वह भाग काला ही रहा। हज़रत बिशर रज़ी. की बोली में हकलाहट थी, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दम किया तो वह हकलाहट जाती रही।

यह वर्णन आगे भी जारी रहने का इरशाद फ़रमाने के बाद हुज़ूरे अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहित अज़ीज़ ने फ़रमाया कि मध्य पूर्व तथा दुनिया के हालात के लिए भी दुआएँ जारी रखें, हालात पहले से भी बुरे होते चले जा रहे हैं। आशंका है कि ईरान पर भी हमला हो और फिर अधिक युद्ध फैल जाए। अल्लाह तआला रहम फ़रमाए। कल ही यह ख़बर आई है कि यमन में कुछ अहमदी बन्दियों की रिहाई हुई है, बल्कि अधिकांश की रिहाई हो गई है, शेष जो कुछ रह गए हैं उनकी रिहाई के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला अधिकारियों के दिल इनकी आर से साफ़ करे। विशेषतः एक महिला हैं, सदर लजना, जो बन्दी हैं। उनकी जल्दी रिहाई के साधन अल्लाह तआला फ़रमाए।

ख़ुत्बः के दूसरे भाग में हुज़ूरे अनवर ने दो मृतकों मुकर्रम मुस्तुफ़ा अहमद ख़ान साहब सपुत्र हज़रत नवाब अब्दुल्लाह ख़ान साहब रज़ी. और हज़रत नवाब अमतुल हफ़ीज़ बेगम साहिबा रज़ी.। आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सबसे छोटे नवासे थे। मुकर्रम डा. मीर दाऊद अहमद साहब ऑफ़ अमरीका की नमाज़े जनाज़ा ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई तथा उनका सद्वर्णन फ़रमाया। हुज़ूरे अनवर ने मृतकों की मग़फ़िरत तथा दर्जात की बुलन्दी के लिए दुआ की।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131